टिप्पणी

ज्ञान के आधार पर सक्रिय हुए और देश आजाद हुआ। इसके लिए उनमें से बहुतों ने कई तरह से त्याग-बलिदान किया। किसी ने घर-बार छोड़ा, कोई जीवन-भर जेल में यातना सहता रहा, कोई फाँसी पर झूल गया। कर्मठ को बलिदान, त्याग ही आज़ादी प्रतीत होता है। ज्ञान, कर्म और त्याग को कवि ने अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया है क्योंकि बलिदान करने वाले कभी मरते नहीं, वे सदैव जीवित रहते हैं, वे दूसरों को जीवन देते हैं और उनके द्वारा निरंतर याद किए जाते हैं।

टिप्पणी:-

उस्ताद द्वारा शागिर्द को दिए गए उत्तर को पढ़कर आज़ादी के विषय में आपके जो विचार हैं, उनका विस्तार हुआ होगा। आपको पता चला होगा कि आज़ादी बेकार की उछल-कूद, उन्मुक्तता, स्वच्छंदता में या यह मान लेने में नहीं है कि मैं चाहे जो करूँ। आज़ादी इसमें भी नहीं है कि हम ख़याली पुलाव पकाते रहें अर्थात् बेकार की कल्पनाएँ करते रहें। इधर-उधर, निश्चिंत होकर घूमना और मान लेना कि यह आज़ादी है- भ्रम है। हमारे समाज में कुछ लोग ऐसी ही गतिविधियों को आज़ादी मानते हैं। इसीलिए शागिर्द के मन में आज़ादी के विषय में जिज्ञासा हुई और उसने इसके समाधान के लिए अपने अनुभवी उस्ताद की शरण ली। शागिर्द को और हमें भी यह पता चला कि आज़ादी जीवन की अनिवार्यताओं से है। आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना ही नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्त्तव्य निभाना भी है।

पाठगत प्रश्न-7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाना' से कवि का क्या आशय है?

   (क) भयभीत होकर जीना ☐ (ख) उन्मुक्त और उच्छृंखल होना ☐

   (ग) इच्छित को प्राप्त करना ☐ (ग) दिशाज्ञान प्राप्त करना ☐

2. अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख होने का आशय है–

   (क) बंधन से छुटकारा पाना ☐ (ख) अज्ञान से ज्ञान की ओर जाना ☐

   (ग) अँधेरे में दीपक जलाना ☐ (घ) सूर्योदय की दिशा में जाना ☐

3. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में 'ई' प्रत्यय नहीं है।

   (क) ज्ञानी ☐ (ख) दानी ☐

टिप्पणी

(ग) पानी ☐ (घ) धानी ☐

4. आज़ादी का मतलब है–

(क) कुछ भी करने की छूट ☐ (ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति ☐

(ग) उच्छृंखलता और स्वच्छंदता ☐ (घ) कर्म से मुक्ति ☐

5. आज़ादी किसके लिए क्या है– एक रेखा खींचकर मिलान कीजिए:

भयभीत	ज्ञान
जीवन	तीर
शिकारी	बिस्तर
तनहाई	बलिदान
अज्ञानी	पनाह
थका-माँदा	महफ़िल

7.2.3 अंश-3

आइए, अब हम कविता के अंतिम अंश को ठीक से समझने से पहले एक बार फिर पढ़ लें।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े
सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

आपने जाना कि आज़ादी का व्यापक अर्थ है। कविता के इस तीसरे अंश में दर्जी यानी उस्ताद ने आज़ादी को कर्म से जोड़ा है। कपड़े सीने का उल्लेख करते हुए दर्जी ने कर्म की ओर संकेत किया है। कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कहने का आशय यह है कि जो परिश्रम करेगा उसी के सपने पूरे होंगे। सुई की चमकदार नोंक पर आज़ादी टिकी हुई है अर्थात् कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। कपड़े सिए जायेंगे, सुई चलती रहेगी यानी कर्म जारी रहेगा, तो आज़ादी बनी रहेगी। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्म का सर्वाधिक महत्त्व है। क्या आप समझ पा रहे हैं कि इस अंश में उस्ताद ने आजा़दी का संबंध सबसे पहले सुई की नोंक से क्यों जोड़ा है? शागिर्द के प्रश्नों में अंतिम प्रश्न क्या था, याद कीजिए। शागिर्द का अंतिम प्रश्न था कि क्या इस कपड़े सीने वाली मशीन और सुई से मेरी मुक्ति आजादी है, अर्थात् कर्म से मुक्ति आजादी है? कभी-कभी निरंतर काम करते हुए हम भी थक जाते हैं और सोचते हैं- बस! अब और काम नहीं, लेकिन यह आराम की स्थिति कुछ देर की स्थिति है। हम फिर काम में लग जाते हैं। कर्म को हमेशा के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। यही बात तो उस्ताद भी कह रहे हैं, कर्म करना आजा़दी है।

उस्ताद का यह मत है कि जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। यह बात अनेक प्रकार के उदाहरण देकर कहता है। कड़ी मेहनत करके धूप,

टिप्पणी

बारिश, जाड़ा सहने के बाद किसान के खेत में फसल लहलहाती है। उस फसल को काटने का अधिकार केवल किसान को ही मिलना चाहिए। रोटी उसे ही मिलती रहनी चाहिए, जो उसके लिए मेहनत करता है। ऐसा न हो कि मेहनत कोई करे और खाए कोई और। बोए कोई और काटे कोई और। श्रम का उचित फल मिलना चाहिए। यह उचित फल आज़ादी का पर्याय है। इसके साथ-साथ आज़ादी का दूसरा नाम कर्म है। कर्म ही आज़ादी है और पारिश्रमिक का उचित फल प्राप्त होना ही आज़ादी है। इस प्रकार आज़ादी का वास्तविक अर्थ, उसके विविध संदर्भ और श्रम तथा कर्त्तव्य के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करते हुए दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा। यहाँ पर उस्ताद का फिर से कपड़े सीने में लग जाना, निरंतर कर्म करते रहने का संदेश देता है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हुई। वह भी सुई में धागा पिरोने लगा उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने पुनः कर्मरत होने का निर्णय ले लिया। आज़ादी को जीवित रखने के लिए श्रम परम आवश्यक है, यह आप भी समझ गए होंगे।

टिप्पणी

- भारत में कभी यह भी होता था कि किसान परिश्रम करता था, खेत जोतता था, उसे सींचता था, खेत की रखवाली करता था, लेकिन फसल पकने पर उसे कोई ताकतवर लोग काटकर ले जाते थे। भारत जब गुलाम था तब भी भारतीयों के श्रम से उत्पन्न वस्तुओं को शासक अंग्रेज ले जाते थे। स्वाधीनता के बाद भी कहीं-कहीं यह स्थिति बनी रही कि कुछ लोगों को श्रम का उचित फल नहीं मिला, इसलिए उन्हें वास्तविक आज़ादी नहीं मिली। इसलिए जनकवि अदम गोंडवी ने आज़ादी के बारे में कहा है-

  सौ में अस्सी फ़ीसदी जो आज भी नासाज़ हैं
  दिल पर रखकर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है?

- कर्त्तव्य एवं अधिकार सिक्के के दो पहलू हैं। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य का स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- आज़ादी केवल राजनीतिक ही नहीं होती, उसके सामाजिक तथा आर्थिक पहलू भी हैं।

क्रियाकलाप-7.3

पाठ में 'सकेगा' और 'सकता' क्रियाओं के प्रयोग देखे जा सकते हैं, जैसे बोनेवाला ही काट सकता है, सपने भी नहीं देख सकेगा आदि। दरअसल, 'सकना' क्रिया का प्रयोग अनेक अवसरों पर, अनेक रूपों में किया जा सकता है, जिनमें प्रमुख हैं:

अनुमति माँगने के रूप में - क्या मैं भी चल सकता हूँ?

संभावना को व्यक्त करने के लिए - तीन दिन में यह काम हो सकेगा।

टिप्पणी

अशक्तता या क्षमता को बताने के लिए – वह बीमार है, इसलिए चल नहीं सकेगा।

आशा की अभिव्यक्ति के लिए– एकजुट होकर दुनिया को बदला जा सकता है।

आग्रह को व्यक्त करने के लिए – यदि मेरे साथ चल सकें, तो बड़ी कृपा होगी।

अब आप भी उपर्युक्त स्थितियों को व्यक्त करने वाले ऐसे पाँच वाक्य लिखिए;

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

7.4 भाव-सौंदर्य

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। चूँकि इस जिज्ञासा का संबंध पाठक से भी है, इसलिए यह कविता उसे आकर्षित करने की क्षमता रखती है। कविता प्रश्नों और उनके उत्तरों की शृंखला स्थापित करती है और इस शृंखला के अनुकूल लयात्मकता बनी है जो आज़ादी की वास्तविकता को स्थापित करती है। कविता में यह संदेश बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दिया गया है कि आज़ादी या मुक्ति का अर्थ उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख नहीं, बल्कि आज़ादी का संबंध श्रम, त्याग और बलिदान से है। आज जिस आज़ादी को हम भोग रहे हैं, उसके पीछे भी असंख्य लोगों का त्याग-बलिदान छिपा है। उनके त्याग-बलिदान ने हमें जीवन दिया है। वे हमारे भीतर जी रहे हैं। इसके साथ-साथ कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती हैं जो श्रम करने के बावजूद इन अधिकारों से वंचित हैं। इस स्थापना के माध्यम से कवि अपने उन सभी पाठकों को एक दिशा देता है जो आज़ादी को एकांगी, निरपेक्ष और व्यक्तिगत समझते हैं। आज़ादी और कर्त्तव्य अर्थात् श्रम के महत्त्व को जानकर ही शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है। यह कविता प्रत्येक पढ़ने वाले को भी प्रभावशाली ढंग से यह प्रेरणा देती है।

7.5 भाषा-सौंदर्य

- कविता की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं।
- कविता में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उस्ताद, दर्जी, शागिर्द, तनहाई, पनाह आदि शब्द फ़ारसी मूल के हैं, तो मुसाफ़िर, महफ़िल आदि शब्द अरबी भाषा के हैं। लैंपपोस्ट शब्द अंग्रेजी भाषा का है।

टिप्पणी

- **चमकीली** नोंक, **अनंत** कपड़े, **गतिमान** पहिए, **नन्हा-सा** बछड़ा आदि में विशेषणों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
- आप जान चुके हैं कि यह कविता बालचंद्रन चुल्लिक्काड ने मूल रूप से मलयालम भाषा में लिखी है। इसका हिन्दी में अनुवाद कवि असद ज़ैदी ने किया है। भाषा-शैली के स्वाभाविक प्रयोग के कारण यह कविता अनूदित होकर भी मूल रचना की तरह आनंद प्रदान करती है।

पाठगत प्रश्न-7.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'जो कपड़े नहीं सिएगा' पंक्ति किसकी ओर संकेत करती है:

   (क) दर्जी के शागिर्द की ओर ☐

   (ख) कर्त्तव्य-पालन करने वाले की ओर ☐

   (ग) फटे-पुराने कपड़े सीने वाले की ओर ☐

   (घ) मस्ती में जीने वाले की ओर ☐

2. दर्ज़ी एक प्रकार का व्यवसाय है। नीचे दिए शब्दों में कौन-सा व्यवसाय नहीं है?

   (क) बढ़ईगिरी ☐ (ख) डॉक्टरी ☐

   (ग) कारीगरी ☐ (घ) राजगिरी ☐

3. दर्जी के अनुसार आज़ादी को भोगने का अधिकार किसे होना चाहिए?

   (क) जो निरंतर कर्म करता है ☐

   (ख) जो देश का नागरिक है ☐

   (ग) जो देश से प्रेम करता है ☐

   (घ) जो सरकार की नौकरी करता है ☐

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए:

   अनंत, गतिमान, शिकारी, अज्ञानी, चमकीली, बोनेवाला

आपने क्या सीखा

- 'आज़ादी' शीर्षक कविता मूलरूप से मलयालम में लिखी गई है। इसके कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। इसका हिंदी अनुवाद असद ज़ैदी ने किया है।

- आज़ादी केवल राजनीतिक नहीं होती। इसके अनेक संदर्भ और अर्थ हैं।
- आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य अथवा कर्म के महत्त्व को भी जानना होगा। काम-धाम से छुटकारा पाना आज़ादी का लक्ष्य नहीं है।
- दर्जी के जवाब में उसके लंबे अनुभव और व्यापक चिंतन क्षमता का परिचय मिलता है। दर्जी और शार्गिद के बहाने आज़ादी के सही मायने बताए गए हैं।
- कविता की भाषा सरल और सहज है।
- अनुवाद मूल रचना का स्वाद प्रदान करती है।

योग्यता-विस्तार

- इस कविता के कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। उनका जन्म 1958 में हुआ था। आप मलयालम साहित्य के चर्चित रचनाकार हैं। 'अमावसी', 'पतिनेटु', 'कवितकव्व' आदि आपकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। साहित्य के अलावा अभिनय तथा निर्देशन के क्षेत्र में भी बालचंद्रन चुल्लिक्काड एक उल्लेखनीय नाम है। पत्रकारिता में आपको विशेषज्ञता हासिल है।

  भारत की स्वाधीनता के बाद अनेक हिंदी कवियों ने देश की आज़ादी को झूठी आज़ादी कहा, क्योंकि आज़ादी के बाद जनता के बहुत बड़े हिस्से के लिए मूलभूत चीजें दुर्लभ रहीं। इस आशय की कविताएँ लिखने वालों में धूमिल का नाम महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में उनका कविता-संग्रह 'संसद से सड़क तक' पठनीय है।

पाठांत प्रश्न

1. शागिर्द ने अपने सवाल 'आज़ादी क्या होती है' के दौरान् कुछ जिज्ञासाएँ व्यक्त की थीं। क्या उन जिज्ञासाओं के साथ आप कुछ और जिज्ञासाएँ जोड़ सकते हैं? यदि हाँ, तो लिखिए।
2. क्या आज़ादी का संबंध कर्म से है? कैसे? समझाकर लिखिए।
3. आपकी दृष्टि में आज़ादी का सही अधिकारी कौन है और क्यों?
4. अपनी आज़ादी को लेकर आप भी परिवार में कई बार तनावग्रस्त हुए होंगे। आप तनावमुक्त कैसे हुए, उसका उल्लेख कीजिए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए

   पर जो कपड़े नहीं सिएगा
   सपने भी नहीं देख सकेगा
   सुई की चमकीली नोंक पर
   टिकी है आज़ादी।

टिप्पणी

6. अपने परिवेश से उदाहरण देते हुए ज्ञान, कर्म और बलिदान के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कीजिए।

7. 'बलिदानी को जीवन' का आशय स्पष्ट कीजिए।

8. शागिर्द ने सुई में धागा पिरोने का निर्णय क्यों ले लिया?

9. निम्नलिखित कविता को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे
कनक तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे!

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति उड़ान सब भूले
बस सपने में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

1. पंछी पिंजरबद्ध होकर क्यों नहीं गा पाते?

2. पंछी पंख टूटने की आशंका क्यों जताता है?

3. पंछी सपने में क्या देखता है?

4. इन पंक्तियों का कोई उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

7.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

5. भयभीत – पनाह, जीवन – बलिदान, शिकारी – तीर, तनहाई – महफ़िल, अज्ञानी – ज्ञान, थका-माँदा – बिस्तर।

7.2 1. क 2. ग 3. क

4. अनंत – 'अन्' उपसर्ग
गतिमान – 'मान' प्रत्यय
शिकारी – 'ई' प्रत्यय
चमकीली – 'ईला' और 'ई' प्रत्यय
(चमक ---> चमकीला ---> चमकीली)
बोनेवाला – 'वाला' प्रत्यय